

Quick word tests

तरक्क्री	तरक्क्री	आह्लाद	आह्लाद	फ्रीज	फ्रीज	मगज़	मगज़	हृत्स्थल	हृत्स्थल	सिर्फ	सिर्फ
ज़्यादा	ज़्यादा	ब्राह्मण	ब्राह्मण	हितिक	हितिक	सम्यग्ज्ञान	सम्यग्ज्ञान	ज्योत्स्ना	ज्योत्स्ना	व्हिस्की	व्हिस्की
मन्ज़ूर	मन्ज़ूर	मिस्त्री	मिस्त्री	एल्जे	एल्जे	दिग्दर्शन	दिग्दर्शन	ईषत्स्पृष्ट	ईषत्स्पृष्ट	इश्क	इश्क
इलेक्ट्रान	इलेक्ट्रान	दुष्प्रह्य	दुष्प्रह्य	उत्प	उत्प	पंक्ति	पंक्ति	उत्सुत	उत्सुत	प्रश्न	प्रश्न
स्ट्रीटकार	स्ट्रीटकार	अद्भुत	अद्भुत	उत्प	उत्प	मंगलवार	मंगलवार	सद्गति	सद्गति	रुश्द	रुश्द
छुट्टी	छुट्टी	इल्ज़ाम	इल्ज़ाम	रत्न	रत्न	दुर्लभ्य	दुर्लभ्य	सद्गन्ध	सद्गन्ध	वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य
महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अक्षरे	अक्षरे	सज़्स	सज़्स	पच्चीस	पच्चीस	उद्घाटन	उद्घाटन	ओष्ठ्य	ओष्ठ्य
ज्येष्ठ	ज्येष्ठ	ज्ञान	ज्ञान	एज्जा	एज्जा	अच्छा	अच्छा	ज़िद्दी	ज़िद्दी	मिस्त्री	मिस्त्री
दर्शात	दर्शात	मौके	मौके	ब्यर्थे	ब्यर्थे	उज्ज	उज्ज	प्रसिद्ध	प्रसिद्ध	आह्वान	आह्वान
चिट्ठी	चिट्ठी	कैंटोमेंट	कैंटोमेंट	तरक्क्री	तरक्क्री	संस्कृत	संस्कृत	उद्बोध	उद्बोध	आह्लाद	आह्लाद
वाङ्मय	वाङ्मय	छूट कुछ	छूट कुछ	फ़ैक्चर	फ़ैक्चर	हिंस्र	हिंस्र	द्रव	द्रव	हास	हास
वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य	करेंट	करेंट	डॉक्टर	डॉक्टर	छुट्टी	छुट्टी	दारिद्र्य	दारिद्र्य	अंकुड़ा	अंकुड़ा
पुनस्स्थापना	पुनस्स्थापना	राष्ट्रून	राष्ट्रून	इलेक्ट्रॉन	इलेक्ट्रॉन	चिट्ठी	चिट्ठी	अध्रुव	अध्रुव	अंतर्निहित	अंतर्निहित
स्वास्थ्य	स्वास्थ्य	काँफी	काँफी	रक्त	रक्त	विशाखपटनम	विशाखपटनम	मंज़ूर	मंज़ूर	अन्तः	अन्तः
कम्प्यूटर	कम्प्यूटर	हिंदू-मुस्लिम	हिंदू-मुस्लिम	वक्त्र	वक्त्र	ट्रेन	ट्रेन	मंज़ी	मंज़ी	अंतर्वेशन	अंतर्वेशन
सान्ध्य	सान्ध्य	करणाया	करणाया	युक्त्यभास	युक्त्यभास	सुपाठ्य	सुपाठ्य	स्वातंत्र्य	स्वातंत्र्य	अग्नि	अग्नि
इज़्जत	इज़्जत	स्नेह	स्नेह	वक्त्र	वक्त्र	लड्डू	लड्डू	द्वंद्व	द्वंद्व	अद्भुत	अद्भुत
उज्ज्वल	उज्ज्वल	श्री	श्री	शुक्ल	शुक्ल	ब्रह्मण्य	ब्रह्मण्य	उन्नीस	उन्नीस	छुछुंदर	छुछुंदर
प्राप्त्याशा	प्राप्त्याशा	स्त्री	स्त्री	रिक्षा	रिक्षा	उत्क्रम	उत्क्रम	इंस्टिट्यूट	इंस्टिट्यूट	हुंकार	हुंकार
इकत्तीस	इकत्तीस	ध्यां	ध्यां	पक्ष	पक्ष	उत्क्षेप	उत्क्षेप	उन्हें	उन्हें	हित इच्छुक	हित इच्छुक
सत्रह	सत्रह	शक्ति	शक्ति	लक्ष्मी	लक्ष्मी	विद्युत्प्रहक	विद्युत्प्रहक	दीन्हो	दीन्हो	कुरी	कुरी
पद्म	पद्म	महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अभक्ष्य	अभक्ष्य	महत्त्व	महत्त्व	नैप्स्यून	नैप्स्यून	कुल्हिया	कुल्हिया
विद्यार्थी	विद्यार्थी	कट्टू	कट्टू	दिक्स्थापन	दिक्स्थापन	पत्थर	पत्थर	प्राप्त	प्राप्त		
उन्नीस	उन्नीस	रूप	रूप	सख्त	सख्त	विद्युत्दर्शी	विद्युत्दर्शी	सब्जी	सब्जी		
पश्चिम	पश्चिम	हूँ	हूँ	अख्त्यार	अख्त्यार	पत्नी	पत्नी	छब्बीस	छब्बीस		
श्रीलंका	श्रीलंका	बुत्तो	बुत्तो	ज़ख्म	ज़ख्म	सपत्न्य	सपत्न्य	मार्किट	मार्किट		
विश्वविद्यालय	विश्वविद्यालय	बार्गी	बार्गी	ख्रिष्टां	ख्रिष्टां	उत्प्रवास	उत्प्रवास	दुर्ज्ञेय	दुर्ज्ञेय		
स्नान	स्नान	कुंग	कुंग	फ़ख्र	फ़ख्र	ल्याहिक	ल्याहिक	उर्दू	उर्दू		
बुद्ध	बुद्ध	हूप	हूप	अग्रास	अग्रास	विद्युतशक्ति	विद्युतशक्ति	निर्द्वन्द्व	निर्द्वन्द्व		

चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्रवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ॥ अर्थात् तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात् एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात् निकास पद्धति होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात् उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागति जाते हैं जो खुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो खुद ढूँढ़ते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्रवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ॥ अर्थात् तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात् एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात् निकास पद्धति होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात् उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागति जाते हैं जो खुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो खुद ढूँढ़ते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

गुदगुदी | शायरी | टेक ज्ञान | Hinglish News | गेम्स | गरमा गरम | Travel | Deals | Property | चुनाव

सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके,
मिडकैप-स्मॉलकैप में
उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा
निकालने पर देना होगा
टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा
विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की
मेहनत, चीन से आया
तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद
शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए
दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं
होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़
में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के
सामने लगे 'प्रियंका-
प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा
विदेशी पूंजी का टॉनिक

उग्र में अंधेरा दूर करने के
लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो
अबोध बच्चियों से दुष्कर्म

सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके,
मिडकैप-स्मॉलकैप में
उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा
निकालने पर देना होगा
टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा
विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की
मेहनत, चीन से आया
तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद
शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए
दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं
होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़
में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के
सामने लगे 'प्रियंका-
प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा
विदेशी पूंजी का टॉनिक

उग्र में अंधेरा दूर करने के
लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो
अबोध बच्चियों से दुष्कर्म

119 देशों के बच्चों ने UAE का राष्ट्रगान गाकर बनाया रिकॉर्ड

केवल 6 सेकेंड में 'आउट ऑफ स्टॉक' हुआ जियाओमी रेडमी नोट

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फ़ैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़ें - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फ़ैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़ें - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

तीन मिररलेस कैमरे के साथ आया निकॉन

Publish Date: Mon, 01 Dec 2014 10:12 AM (IST) | Updated Date: Mon, 01 Dec 2014 11:35 AM (IST)

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमशः 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्यू1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यू 1 दुनिया का पहला वाटरप्रूफ और शॉकप्रूफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमांस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मूविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5 मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दूसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1 वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमांस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंट्रास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4 एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीडी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमशः 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्यू1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यू 1 दुनिया का पहला वाटरप्रूफ और शॉकप्रूफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमांस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मूविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5 मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दूसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1 वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमांस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंट्रास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4 एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीडी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

बेंगलुरु। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत

बेंगलुरु। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत

फोटो में देखें, क्या हुआ जब ग्रांड फैशन इंवेट में Bollywood Divas ने रैंप पर उतरकर बिखेरे जलवे

गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवतः खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट॥

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रखे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी नदियों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करें। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी कहिए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नही होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झुँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस दब से होता, इस बखेड़े को टालता।

गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवतः खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट॥

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रखे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी नदियों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करें। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी कहिए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नही होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झुँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं॥

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं॥

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसैं भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वही झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहुत सी नाँह-नूह की और कहा -

मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं॥

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं॥

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसैं भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वही झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहुत सी नाँह-नूह की और कहा -

pg 7/18

U/Uu variant spacing	पपपाँपपराँपपकाँपप	Numeral spacing	पपन, पवन.	पपए, पवए.	पपद्, पवद्.
	पपपाँपपराँपपकाँपप		पपप, पवप.	पपऐ, पवऐ.	पपद्ध, पवद्ध.
पपहुपवपवहुवव	पपपोपपरोपपकोपप	००००१०१०११	पपफ, पवफ.	पपऐँ, पवऐँ.	पपद्ध, पवद्ध.
पपहूपवपवहूवव	पपपोँपपरोँपपकोँपप	००१०१०११११	पपब, पवब.	पपऐ, पवऐ.	पपद्ध, पवद्ध.
पपहपवपवहवव	पपपाँपपराँपपकाँपप	००२०१०१२११	पपभ, पवभ.	पपआ, पवआ.	पपद्ध, पवद्ध.
पपहूपवपवहूवव	पपपोपपरोपपकोपप	००३०१०१३११	पपम, पवम.	पपओ, पवओ.	पपद्, पवद्.
पपहुपवपवहुवव	पपपोँपपरोँपपकोँपप	००४०१०१४११	पपय, पवय.	पपऔ, पवऔ.	पपष्ट, पवष्ट.
पपहूपवपवहूवव	पपपाँपपराँपपकाँपप	००५०१०१५११	पपर, पवर.	पपऋ, पवऋ.	पपष्ट, पवष्ट.
पपरुपवपवरुवव	पपपोपपरोपपकोपप	००६०१०१६११	पपल, पवल.	पपऌ, पवऌ.	पपष्ठ, पवष्ठ.
पपरूपवपवरूवव	पपपोँपपरोँपपकोँपप	००७०१०१७११	पपळ, पवळ.	पपल्, पवल्ल.	पपष्ठ, पवष्ठ.
पपदुपवपवदुवव	पपपाँपपराँपपकाँपप	००८०१०१८११	पपव, पवव.	पपलृ, पवल्लृ.	पपष्ठ, पवष्ठ.
पपदूपवपवदूवव		००९०१०१९११	पपश, पवश.		पपष्ठ, पवष्ठ.
पपदृपवपवदृवव	पपपुपपरुपपकुपप		पपष, पवष.	पपझ, पवझ.	पपष्ठ, पवष्ठ.
	पपपूपपरूपपकूपप	Letter-punct spacing	पपस, पवस.	पपछ, पवछ.	पपष्ठ, पवष्ठ.
Vowel sign spacing	पपपृपपरूपपकृपप		पपह, पवह.	पपट, पवट.	पपहु, पवहु.
पपपंपपरंपपकंपप	पपपृपपरूपपकृपप	पपक, पवक.	पपक्र, पवक्र.	पपट्र, पवट्र.	पपहु, पवहु.
पपपॅपपरॅपपकॅपप	पपपूपपरूपपकूपप	पपख, पवख.	पपख, पवख.	पपड, पवड.	पपहु, पवहु.
पपपँपपरँपपकँपप	पपपूपपरूपपकूपप	पपग, पवग.	पपग, पवग.	पपद्र, पवद्र.	पपहु, पवहु.
पपपॅपपरॅपपकॅपप		पपघ, पवघ.	पपज़, पवज़.	पपढ, पवढ.	पपहु, पवहु.
पपपेपपरेपपकेपप	पपपॅपपरॅपपकॅपप	पपङ, पवङ.	पपड़, पवड़.	पपर, पवर.	पपहु, पवहु.
पपपैंपपरैंपपकैंपप	पपपॅपपरॅपपकॅपप	पपच, पवच.	पपढ़, पवढ़.	पपरू, पवरू.	पपहु, पवहु.
पपपैंपपरैंपपकैंपप	पपपॅपपरॅपपकॅपप	पपछ, पवछ.	पपफ़, पवफ़.	पपह, पवह.	पपहु, पवहु.
पपपेपपरेपपकेपप	पपपॅपपरॅपपकॅपप	पपज, पवज.	पपय, पवय.	पपळ, पवळ.	पपरु, पवरु.
पपपेंपपरेंपपकेंपप	पपपॅपपरॅपपकॅपप	पपझ, पवझ.	पपक्ष, पवक्ष.		पपरु, पवरु.
पपपैंपपरैंपपकैंपप	पपपॅपपरॅपपकॅपप	पपञ, पवञ.	पपज्ञ, पवज्ञ.	पपक्त, पवक्त.	पपदु, पवदु.
पपपैपपरैपपकैपप	पपपॅपपरॅपपकॅपप	पपट, पवट.		पपङ्ग, पवङ्ग.	पपदू, पवदू.
पपपैंपपरैंपपकैंपप	पपपॅपपरॅपपकॅपप	पपठ, पवठ.	पपअ, पवअ.	पपङ्ग, पवङ्ग.	पपदृ, पवदृ.
पपपैंपपरैंपपकैंपप	पपपॅपपरॅपपकॅपप	पपड, पवड.	पपअँ, पवअँ.	पपट्ट, पवट्ट.	-
पपपैंपपरैंपपकैंपप	पपपॅपपरॅपपकॅपप	पपढ, पवढ.	पपअँ, पवअँ.	पपट्ट, पवट्ट.	पपक; पवक:
	पपपैंपपरैंपपकैंपप	पपण, पवण.	पपइ, पवइ.	पपट्ट, पवट्ट.	पपख; पवख:
पपपापपरापपकापप	पपपऽपवपववऽवव	पपत, पवत.	पपई, पवई.	पपड्ड, पवड्ड.	पपग; पवग:
पपपिपपरिपपकिपप	पप?पवपव?वव	पपथ, पवथ.	पपउ, पवउ.	पपड्ड, पवड्ड.	पपघ; पवघ:
पपपीपपरीपपकीपप	पपप:पवपवव:वव	पपद, पवद.	पपऊ, पवऊ.	पपड्ड, पवड्ड.	पपङ; पवङ:
पपपीँपपरीँपपकीँपप		पपध, पवध.		पपद्ध, पवद्ध.	

पपच; पवचः	पपङ्; पवङ्:	पपरु; पवरुः	पपहु; पवहुः	पपम। पवमः	पपओ। पवओः	पपद्। पवद्:
पपछ; पवछः	पपढ्; पवढ्:	पपह; पवहः	पपहू; पवहूः	पपय। पवयः	पपऔ। पवऔः	पपष्ट। पवष्टः
पपज; पवजः	पपफ़; पवफ़ः	पपळ्; पवळ्:	पपरु; पवरुः	पपर। पवरः	पपक्र। पवक्रः	पपष्ट्र। पवष्ट्रः
पपझ; पवझः	पपय़; पवय़ः		पपरु; पवरुः	पपल। पवलः	पपक्र। पवक्रः	पपष्ठ। पवष्ठः
पपञ; पवञः	पपक्ष; पवक्षः	पपक्त; पवक्तः	पपदु; पवदुः	पपळ। पवळः	पपलृ। पवलृः	पपष्ठ्र। पवष्ठ्रः
पपट; पवटः	पपज्ञ; पवज्ञः	पपङ्ग; पवङ्गः	पपदू; पवदूः	पपव। पववः	पपलृ। पवलृः	पपल्ल। पवल्लः
पपठ; पवठः		पपङ्ग; पवङ्गः	पपदृ; पवदृः	पपश। पवशः		पपल्ल। पवल्लः
पपड; पवडः	पपअ; पवअः	पपट्ट; पवट्टः		पपष। पवषः	पपङ्ग। पवङ्गः	पपल्ल। पवल्लः
पपढ; पवढः	पपऐ; पवऐः	पपट्ट; पवट्टः	-	पपस। पवसः	पपछ्। पवछ्ः	पपल्ल। पवल्लः
पपण; पवणः	पपऑ; पवऑः	पपठ्; पवठ्ः	पपक। पवकः	पपह। पवहः	पपट्र। पवट्रः	पपहु। पवहुः
पपत; पवतः	पपइ; पवइः	पपड्ड; पवड्डः	पपख। पवखः	पपक्र। पवक्रः	पपट्र। पवट्रः	पपहू। पवहूः
पपथ; पवथः	पपई; पवईः	पपड्ड; पवड्डः	पपग। पवगः	पपख। पवखः	पपङ्ग। पवङ्गः	पपह। पवहः
पपद; पवदः	पपउ; पवउः	पपड्ड; पवड्डः	पपघ। पवघः	पपग। पवगः	पपद्र। पवद्रः	पपह। पवहः
पपध; पवधः	पपऊ; पवऊः	पपद्ध; पवद्धः	पपङ। पवङः	पपज। पवजः	पपद्र। पवद्रः	पपहु। पवहुः
पपन; पवनः	पपए; पवएः	पपद्ग; पवद्गः	पपच। पवचः	पपङ्। पवङ्गः	पपरु। पवरुः	पपहु। पवहुः
पपप; पवपः	पपऐ; पवऐः	पपद्ध; पवद्धः	पपछ। पवछः	पपढ्। पवढ्ः	पपह। पवहः	पपहू। पवहूः
पपफ; पवफः	पपऐ; पवऐः	पपद्ध; पवद्धः	पपज। पवजः	पपफ़। पवफ़ः	पपळ्। पवळ्ः	पपरु। पवरुः
पपब; पवबः	पपऐ; पवऐः	पपद्ध; पवद्धः	पपझ। पवझः	पपय़। पवय़ः		पपरु। पवरुः
पपभ; पवभः	पपआ; पवआः	पपद्ध; पवद्धः	पपञ। पवञः	पपक्ष। पवक्षः	पपक्त। पवक्तः	पपदु। पवदुः
पपम; पवमः	पपओ; पवओः	पपद्ग; पवद्गः	पपट। पवटः	पपज्ञ। पवज्ञः	पपङ्ग। पवङ्गः	पपदू। पवदूः
पपय; पवयः	पपऔ; पवऔः	पपष्ट; पवष्टः	पपठ। पवठः		पपङ्ग। पवङ्गः	पपदृ। पवदृः
पपर; पवरः	पपक्र; पवक्रः	पपष्ट्र; पवष्ट्रः	पपड। पवडः	पपअ। पवअः	पपट्ट। पवट्टः	-
पपल; पवलः	पपक्र; पवक्रः	पपष्ठ; पवष्ठः	पपढ। पवढः	पपऐ। पवऐः	पपट्ट। पवट्टः	पपक! पवक?
पपळ; पवळः	पपलृ; पवलृः	पपष्ठ्र; पवष्ठ्रः	पपण। पवणः	पपऑ। पवऑः	पपट्ट। पवट्टः	पपख! पवख?
पपव; पववः		पपल्ल; पवल्लः	पपत। पवतः	पपइ। पवइः	पपड्ड। पवड्डः	पपग! पवग?
पपश; पवशः		पपल्ल; पवल्लः	पपथ। पवथः	पपई। पवईः	पपड्ड। पवड्डः	पपघ! पवघ?
पपष; पवषः	पपङ्ग; पवङ्गः	पपल्ल; पवल्लः	पपद। पवदः	पपउ। पवउः	पपड्ड। पवड्डः	पपङ! पवङ?
पपस; पवसः	पपछ्; पवछ्ः	पपल्ल; पवल्लः	पपध। पवधः	पपऊ। पवऊः	पपद्ध; पवद्धः	पपच! पवच?
पपह; पवहः	पपट्र; पवट्रः		पपन। पवनः	पपए। पवएः	पपद्ग; पवद्गः	पपछ! पवछ?
पपक्र; पवक्रः	पपट्र; पवट्रः	पपहु; पवहुः	पपप। पवपः	पपऐ। पवऐः	पपद्ध; पवद्धः	पपज! पवज?
पपख; पवखः	पपङ्ग; पवङ्गः	पपहू; पवहूः	पपफ। पवफः	पपऐ। पवऐः	पपद्ध; पवद्धः	पपझ! पवझ?
पपग; पवगः	पपङ्ग; पवङ्गः	पपह; पवहः	पपब। पवबः	पपऐ। पवऐः	पपद्ध; पवद्धः	पपञ! पवञ?
पपज; पवजः	पपद्र; पवद्रः	पपह; पवहः	पपभ। पवभः	पपआ। पवआः	पपद्ध; पवद्धः	
	पपट्र; पवट्रः					

"तपवपत"	"इपवपइ"	"डुपवपडु"	Num-punct spacing	li Vowel sign - base	पपळिपपळिंपपळिंपप
"थपवपथ"	"ईपवपई"	"डुपवपडु"	पवप ११०१ वपव	पपकिपपकिंपपकिंपप	पपविपपविंपपविंपप
"दपवपद"	"उपवपउ"	"डुपवपडु"	पवप १२०१ वपव	पपखिपपखिंपपखिंपप	पपशिपपशिंपपशिंपप
"धपवपध"	"ऊपवपऊ"	"द्वपवपद्व"	पवप १३०१ वपव	पपगिपपगिंपपगिंपप	पपषिपपषिंपपषिंपप
"नपवपन"	"एपवपए"	"द्वपवपद्व"	पवप १४०१ वपव	पपघिपपघिंपपघिंपप	पपसिपपसिंपपसिंपप
"पपवपप"	"ऐपवपऐ"	"द्वपवपद्व"	पवप १५०१ वपव	पपडिपपडिंपपडिंपप	पपहिपपहिंपपहिंपप
"फपवपफ"	"ऐपवपऐवव"	"द्वपवपद्व"	पवप १६०१ वपव	पपचिपपचिंपपचिंपप	पपक्षिपपक्षिंपपक्षिंपप
"बपवपब"	"ऐपवपऐ"	"द्वपवपद्व"	पवप १७०१ वपव	पपछिपपछिंपपछिंपप	पपज्ञिपपज्ञिंपपज्ञिंपप
"भपवपभ"	"आपवपआ"	"द्वपवपद्व"	पवप १८०१ वपव	पपजिपपजिंपपजिंपप	
"मपवपम"	"ओपवपओ"	"द्वपवपद्व"	पवप १९०१ वपव	पपझिपपझिंपपझिंपप	
"यपवपय"	"औपवपऔ"	"द्वपवपद्व"		पपजिपपजिंपपजिंपप	
"रपवपर"	"ऋपवपऋ"	"द्वपवपद्व"		पपटिपपटिंपपटिंपप	
"लपवपल"	"ऋपवपऋ"	"द्वपवपद्व"	०००,०१०,०११	पपठिपपठिंपपठिंपप	
"ळपवपळ"	"लृपवपलृ"	"द्वपवपद्व"	००१,०१०,१११	पपडिपपडिंपपडिंपप	
"वपवपव"	"लृपवपलृ"	"द्वपवपद्व"	००२,०१०,२११	पपढिपपढिंपपढिंपप	
"शपवपश"		"द्वपवपद्व"	००३,०१०,३११	पपणिपपणिंपपणिंपप	
"षपवपष"	"इपवपइ"	"द्वपवपद्व"	००४,०१०,४११	पपतिपपतिंपपतिंपप	
"सपवपस"	"छपवपछ"	"द्वपवपद्व"	००५,०१०,५११	पपथिपपथिंपपथिंपप	
"हपवपह"	"टपवपट"	"द्वपवपद्व"	००६,०१०,६११	पपदिपपदिंपपदिंपप	
"कपवपक"	"टपवपट"	"द्वपवपद्व"	००७,०१०,७११	पपधिपपधिंपपधिंपप	
"खपवपख"	"डपवपड"	"द्वपवपद्व"	००८,०१०,८११	पपनिपपनिंपपनिंपप	
"गपवपग"	"द्वपवपद्व"	"द्वपवपद्व"	००९,०१०,९११	पपपिपपपिंपपपिंपप	
"जपवपज"	"द्रपवपद्र"	"द्वपवपद्व"		पपफिपपफिंपपफिंपप	
"ड़पवपड़"	"रूपवपरू"	"द्वपवपद्व"	०००,०१०,०११	पपबिपपबिंपपबिंपप	
"ढ़पवपढ़"	"हपवपह"	"द्वपवपद्व"	००१,०१०,१११	पपभिपपभिंपपभिंपप	
"फ़पवपफ़"	"हपवपह"	"द्वपवपद्व"	००२,०१०,२११	पपमिपपमिंपपमिंपप	
"य़पवपय़"	"ळपवपळ"	"द्वपवपद्व"	००३,०१०,३११	पपयिपपयिंपपयिंपप	
"क्षपवपक्ष"	"क्तपवपक्त"	"द्वपवपद्व"	००४,०१०,४११	पपरिपपरिंपपरिंपप	
"ज्ञपवपज्ञ"	"ङ्गपवपङ्ग"	"द्वपवपद्व"	००५,०१०,५११	पपलिपपलिंपपलिंपप	
	"ङ्गपवपङ्ग"	"द्वपवपद्व"	००६,०१०,६११		
"अपवपअ"	"ट्टपवपट्ट"	"द्वपवपद्व"	००७,०१०,७११		
"ऐपवपऐ"	"ट्टपवपट्ट"	"द्वपवपद्व"	००८,०१०,८११		
"ऑपवपऑ"	"ट्टपवपट्ट"	"द्वपवपद्व"	००९,०१०,९११		

pg 12/18

pg 13/18

पपङ्कपपङ्खपपङ्गपपङ्घपपङ्ङपपङ्चप
पङ्छपपङ्जपपङ्झपपङ्ञपपङ्टपपङ्ठपपङ्हुप
पङ्हुपपङ्णपपङ्तपपङ्थपपङ्दपपङ्धपपङ्नप
पङ्त्तपपङ्पपपङ्फपपङ्बपपङ्भपपङ्मपपङ्म्यप
पङ्गपपङ्गपपङ्गलपपङ्गळपपङ्गळपपङ्गवपपङ्गशप
पङ्गषपपङ्गसपपङ्गहपपङ्गकपपङ्गखपपङ्ग।पपङ्गजप
पङ्गडपपङ्गढपपङ्गफपपङ्गयपप

पपढ्कपपढ्खपपढ्गपपढ्घपपढ्ङपपढ्चप
 पढ्छपपढ्जपपढ्झपपढ्झपपढ्ठपपढ्ठपपढ्डप
 पढ्ढपपढ्णपपढ्तपपढ्थपपढ्दपपढ्धपपढ्नप
 पढ्न्पपढ्पपपढ्फपपढ्बपपढ्भपपढ्मपपढ्मप
 पढ्द्रपपढ्द्रपपढ्दलपपढ्दळपपढ्दळपपढ्दवपपढ्दशप
 पढ्दषपपढ्दसपपढ्दहपपढ्दकपपढ्दखपपढ्द!पपढ्जप
 पढ्ङपपढ्ढपपढ्फपपढ्गपप

पपण्कपपण्खपपण्गपपण्घपपण्ङपपण्चप
 पण्छपपण्जपपण्झपपण्झपपण्ठपपण्ठपपण्डप
 पण्ढपपण्णपपण्णतपपण्णथपपण्णदपपण्णधपपण्णनप
 पण्णपपण्णपपण्णफपपण्णबपपण्णभपपण्णमपपण्णयप
 पण्णपपण्णरपपण्णलपपण्णळपपण्णळपपण्णवपपण्णशप
 पण्णषपपण्णसपपण्णहपपण्णकपपण्णखपपण्ण!पपण्णजप
 पण्णङपपण्णढपपण्णफपपण्णयपप

पपत्कपपपत्खपपपतापपपत्थपपपत्डपपपत्चपपपत्छप
 पत्जपपपत्झपपपत्तपपपत्ठपपपत्डपपत्ढपपत्ताप
 पत्तपपपत्थपपपत्दपपपत्थपपत्तपपत्तपपत्तपपत्तप
 पत्बपपपत्भपपपत्मपपपत्त्यपपत्त्रपपत्त्पपत्तलपपत्तळप
 पत्तळपपत्त्वपपत्तशपपत्तषपपत्तसपपत्तहपपत्तकपपत्तखप
 पत्तापपत्तजपपत्तङपपत्तढपपत्तफपपत्तयपप

पपथ्कपपपथ्खपपपथापपपथ्घपपपथ्ङपपपथ्चपपपथ्छप
 पथ्जपपपथ्झपपपथ्जपपथ्ठपपपथ्ठपपथ्डपपथ्ढप
 पथ्णपपपथ्णपपथ्णतपपथ्णथपपथ्णदपपथ्णधपपथ्णनप
 पथ्णपपथ्णपपथ्णफपपथ्णबपपथ्णभपपथ्णमपपथ्णयप
 पथ्णपपथ्णरपपथ्णलपपथ्णळपपथ्णळपपथ्णवपपथ्णशप
 पथ्णषपपथ्णसपपथ्णहपपथ्णकपपथ्णखपपथ्ण!पपथ्णजप
 पथ्णङपपथ्णढपपथ्णफपपथ्णयपप

पपद्कपपपद्खपपपद्गपपपद्घपपपद्ङपपपद्चप
 पद्छपपपद्जपपपद्झपपपद्अपपपद्टपपपद्ठप
 पद्डपपपद्ढपपपद्णपपपद्तपपपद्थपपपद्दपपपद्धप
 पद्नपपपद्न्पपपद्पपपपद्फपपपद्बपपपद्भपपपद्मप
 पद्यपपपद्द्रपपपद्द्रपपपद्दलपपपद्दळपपपद्दळपपपद्दवप
 पद्दशपपपद्दषपपपद्दसपपपद्दहपपपद्दकपपपद्दखप
 पद्द!पपपद्दजपपपद्दङपपपद्दढपपपद्दफपपपद्दयपप

पपध्कपपपध्खपपपधापपपध्घपपपध्ङपपपध्चप
 पध्छपपपध्जपपपध्झपपपध्अपपपध्टपपपध्ठपपपध्डप
 पध्ढपपपध्णपपपध्णतपपध्णथपपध्णदपपध्णधपपध्णनप
 पध्णपपध्णपपध्णफपपध्णबपपध्णभपपध्णमपपध्णयप
 पध्णपपध्णरपपध्णलपपध्णळपपध्णळपपध्णवपपध्णशप
 पध्णषपपध्णसपपध्णहपपध्णकपपध्णखपपध्ण!पपध्णजप
 पध्णङपपध्णढपपध्णफपपध्णयपप

पपन्कपपपन्खपपपनापपपन्थपपपन्डपपपन्चपपपन्छप
 पन्जपपपन्झपपपन्अपपपन्टपपपन्ठपपपन्डपपपन्ढप
 पन्णपपपन्तपपपन्थपपपन्दपपपन्धपपपन्नपपपन्तपपपन्त्यप
 पन्फपपपन्बपपपन्भपपपन्मपपपन्मपपपन्त्रपपपन्त्पपपन्तलप
 पन्तळपपपन्तळपपपन्वपपपन्शपपपन्षपपपन्सपपपन्हपपपन्कप
 पन्खपपपन्तापपपन्जपपपन्ङपपपन्ढपपपन्फपपपन्त्यपप

पपत्कपपपत्खपपपतापपपत्थपपपत्डपपपत्चपपपत्छप
 पत्जपपपत्झपपपत्तपपपत्ठपपपत्डपपत्ढप
 पत्तपपपत्तपपपत्थपपपत्दपपपत्थपपत्तपपत्तपपत्तप
 पत्बपपपत्भपपपत्मपपपत्त्यपपत्त्रपपपत्त्पपपत्तलप
 पत्तळपपपत्तळपपपत्त्वपपपत्तशपपपत्तषपपपत्तसपपपत्तहपपपत्तकप
 पत्तखपपपत्तापपपत्तजपपपत्तङपपपत्तढपपपत्तफपपपत्तयपप

पपप्कपपपप्खपपपापपपप्घपपपप्ङपपपप्चपपपप्छप
 पप्जपपपप्झपपपप्अपपपप्टपपपप्ठपपपप्डपपपप्पाप
 पप्तपपपप्थपपपप्दपपपप्धपपपप्नपपपप्नपपपप्मपपपप्फप
 पप्बपपपप्भपपपप्मपपपप्यपपपप्प्रपपप्प्रपपपप्लपपपप्ळप
 पप्ळपपपप्चपपपप्शपपपप्षपपपप्सपपपप्हपपपप्कपपपप्खप
 पप्!पपपप्जपपपप्ङपपपप्ढपपपप्फपपपप्त्यपप

पपफ्कपपपफ्खपपपफ्गपपपफ्घपपपफ्ङपपपफ्चप
 पफ्छपपपफ्जपपपफ्झपपपफ्अपपपफ्टपपपफ्ठपपपफ्डप
 पफ्ढपपपफ्णपपपफ्णतपपफ्णथपपफ्णदपपफ्णधपपफ्णनप
 पफ्णपपफ्णपपफ्णफपपफ्णबपपफ्णभपपफ्णमपपफ्णयप
 पफ्णपपफ्णरपपफ्णलपपफ्णळपपफ्णळपपफ्णवपपफ्णशप
 पफ्णषपपफ्णसपपफ्णहपपफ्णकपपफ्णखपपफ्ण!पपफ्णजप
 पफ्णङपपफ्णढपपफ्णफपपफ्णयपप

पपक्कपपक्खपपक्गपपक्घपपक्ङपपक्चपपक्छप
 पक्जपपक्झपपक्अपपक्टपपक्ठपपक्डपपक्ढपपक्पाप
 पक्तपपक्थपपक्दपपक्थपपक्नपपक्नपपक्मपपक्फप
 पक्बपपक्भपपक्मपपक्यपपक्प्रपपक्प्रपपक्लपपक्ळप
 पक्ळपपक्चपपक्शपपक्षपपक्सपपक्हपपक्कपपक्खप
 पक्!पपक्जपपक्ङपपक्ढपपक्फपपक्त्यपप

पपभ्कपपभ्खपपभ्गपपभ्घपपभ्ङपपभ्चपपभ्छप
 पभ्जपपभ्झपपभ्अपपभ्टपपभ्ठपपभ्डपपभ्ढप
 पभ्णपपभ्णतपपभ्णथपपभ्णदपपभ्णधपपभ्णनप
 पभ्णपपभ्णपपभ्णफपपभ्णबपपभ्णभपपभ्णमपपभ्णयप
 पभ्णपपभ्णरपपभ्णलपपभ्णळपपभ्णळपपभ्णवपपभ्णशप
 पभ्णषपपभ्णसपपभ्णहपपभ्णकपपभ्णखपपभ्ण!पपभ्णजप
 पभ्णङपपभ्णढपपभ्णफपपभ्णयपप

पपम्कपपम्खपपमापपम्यपपम्ङपपम्यपपम्छप
पम्जपपम्झपपमञपपम्टपपमठपपमडपपमढप
पम्णपपमत्तपपमथपपमद्पपमधपपमन्पपमप्तपपम्यप
पम्फपपम्बपपमभपपम्मपपम्यपपमन्नपपम्रपपम्लप
पम्ळपपम्ळपपम्वपपमशपपमषपपमसपपमहप
पम्क्कपपम्खपपमापपम्जपपम्ङपपम्ढपपम्फप
पम्यपप

पपय्कपपय्खपपयापपय्पपय्ठपपय्पपय्छप
पय्जपपय्झपपय्ञपपय्टपपय्ठपपय्डपपय्ढप
पय्णपपय्त्तपपय्थपपय्दपपय्थपपय्न्पपय्न्पपय्यप
पय्फपपय्बपपय्भपपय्मपपय्यपपय्गपपय्गपपय्लप
पय्ळपपय्ळपपय्वपपय्शपपय्षपपय्सपपय्हप
पय्क्कपपय्क्कपपयापपय्जपपय्झपपय्ढपपय्फप
पय्यपप

पपकपपखपपगपपघपपडपपचपपछपपर्जप
पझपपर्जपपटपपठपपडपपढपपणपपतपपथप
पदपपधपपनपपत्तपपपपपफपपबपपभपपमप
पर्यपपरपपरपपलपपळपपळपपवपपशप
पषपपसपपहपपकपपखपपगपपजपपडपपढप
पफपपर्यपप

पपक्पपखपपगपपघपपङपपचपपछप
पजपपझपपञपपटपपठपपडपपढपपणप
पतपपथपपदपपधपपनपपत्तपपप्पपपफप
पबपपभपपमपपयपपरूपपपलपपळप
पळपपवपपशपपषपपसपपहपपक्कपपखप
पगपपजपपडपपढपपफपपयपप

पपलकपपलखपपलपपलपपलपपलपपलपपलप
पलजपपलजपपलजपपलजपपलजपपलजपपलजप
पलपपपलपपलपपलपपलपपलपपलपपलपपलप
पलपपपलपपलपपलपपलपपलपपलपपलपपलप
पलपपपलपपलपपलपपलपपलपपलपपलपपलप
पलपपपलपपलपपलपपलपपलपपलपपलपपलप
पलपपपलपपलपपलपपलपपलपपलपपलपपलप
पलपपपलपपलपपलपपलपपलपपलपपलपपलप

പപകപപകഖപപകഗപപകഘപപകങപപകചപ
 പകഛപപകജപപകഝപപകഞപപകടപപകഢപ
 പകടപപകഢപപകണപപകതപപകഥപപകദപ
 പകധപപകനപപകന്തപപകനപപകപപപകബപ
 പകഭപപകമപപകയപപകര്പപകരപപകലപപകല്പ
 പകല്പപപകവപപകഷപപകഷപപകസപപകഹപ
 പകകപപകഖപപകഗപപകഘപപകങപ
 പകടപപകഢപപകണപ

പഥകപഥഖപഥഗപഥധപഥഢപഥച
 പഥഛപഥജപഥझപഥഞപഥടപഥഠപ
 പഥഡപഥഭപഥബപഥതപഥഥപഥദപ
 പഥധപഥനപഥന്പഥമപഥഫപഥബപ
 പഥभपഥमपഥयपഥല്പഥരപഥലപ
 പഥळപഥവപഥശപഥषപഥസപ
 പഥഹപഥക്പഥക്ഷപഥഗപഥജപഥഢപ
 പഥഢപഥകപഥയപ

पपक्कपपळपपवापपव्यपपळपपव्यपपळप
 पवजपपळपपवजपपवपपवपपवपपवपपवपपवप
 पवपपवपपवपपवपपवपपवपपवपपवपपवपपवप
 पवपपवपपवपपवपपवपपवपपवपपवपपवपपवप
 पवपपवपपवपपवपपवपपवपपवपपवपपवपपवप
 पवपपवपपवपपवपपवपपवपपवपपवपपवपपवप
 पवपपवपपवपपवपपवपपवपपवपपवपपवपपवप

पपशकपपश्खपपशगपपशघपपशङपपश्वपपशष्ठप
पशजपपशझपपशञपपशटपपशठपपशडपपशढप
पशणपपशतपपशथपपशदपपशधपपशप्पपपशत्तप
पशपपपशफपपशबपपशभपपशमपपशयपपश्रप
पश्रपपश्लपपशळपपशळपपश्वपपशशपपशषप
पशसपपशहपपशकपपशखपपशगपपशजपपशङप
पशढपपशफपपशयपप

पपष्कपपष्वपपष्पपष्पपष्पपष्पपष्पपष्प
पष्जपपष्झपपष्जपपष्जपपष्जपपष्जपपष्जप
पष्तपपष्थपपष्दपपष्थपपष्जपपष्जपपष्जप
पष्पपपष्पपपष्पपपष्पपपष्पपपष्पपपष्प
पष्ठपपष्ठपपष्ठापपष्ठापपष्ठापपष्ठापपष्ठाप
पष्त्रपपष्त्रापपष्त्रपपष्त्रपपष्त्रपपष्त्रपपष्त्रप

पपरस्कपपस्खपपस्यापपस्यपपस्डपपस्वप
पस्छपपस्जपपस्झपपस्ञपपस्टपपस्थपपस्डप
पस्ठपपस्यापपस्तपपस्थपपस्दपपस्यपपस्नप
पस्नपपस्यपपस्यपपस्वपपस्वपपस्वपपस्वप
पस्त्रपपस्त्रपपस्त्रपपस्त्रपपस्त्रपपस्त्रपपस्त्रप
पस्त्रपपस्त्रपपस्त्रपपस्त्रपपस्त्रपपस्त्रपपस्त्रप
पस्त्रपपस्त्रपपस्त्रपपस्त्रपपस्त्रपपस्त्रपपस्त्रप
पस्त्रपपस्त्रपपस्त्रपपस्त्रपपस्त्रपपस्त्रपपस्त्रप

पपह्कपपह्खपपट्ठापपह्घपपह्ङपपह्चपपह्छप
पह्जपपह्झपपह्ञपपह्टपपह्ठपपह्डपपह्ढप
पह्णपपह्त्तपपह्थपपह्दपपह्धपपह्णपपह्त्तपपह्त्सप
पह्फपपह्बपपह्भपपह्मपपह्मपपह्पपह्पपह्प
पह्ळपपह्ळपपह्ळपपह्शपपह्शपपह्स्सपपह्हप
पह्क्कपपह्खपपट्ठापपह्जपपह्ङपपह्ढप
पह्क्कपपह्त्तपप

पपश्कपपश्खपपश्गपपश्घपपश्ङपपश्चपपश्छप
 पश्जपपश्झपपश्ञपपश्टपपश्ठपपश्डपपश्ढप
 पश्णपपश्तपपश्थपपश्दपपश्धपपश्नपपश्मप
 पश्फपपश्बपपश्भपपश्मपप पश्यपपश्लप
 पश्ळपपश्मपवपपश्शपप पश्षपपश्सपपश्हपप

पपङ्कपपङ्खपपङ्गपपङ्घपपङ्ङपपङ्चपपङ्छप
 पङ्जपपङ्झपपङ्ञपपङ्टपपङ्ठपपङ्डपपङ्ढप
 पङ्णपपङ्तपपङ्थपपङ्दपपङ्धपपङ्नपपङ्मप
 पङ्फपपङ्बपपङ्भपपङ्मपप पङ्यपपङ्लप
 पङळपपङ्मपवपपङ्शपप पङ्षपपङ्सपपङ्हपप

पपक्कपपक्खपपक्कापपक्घपपक्ङपपक्चपपक्छप
 पक्जपपक्झपपक्ञपपक्टपपक्ठपपक्डपपक्ढप
 पक्णापपक्तापपक्थपपक्दपपक्धपपक्नपपक्मप
 पक्फपपक्बपपक्भपपक्मपप पक्यपपक्लप
 पक्ळपपक्मपवपपक्शपप पक्षपपक्सपपक्हपप

पपक्कपपक्खपपक्कापपक्घपपक्ङपपक्चपपक्छप
 पक्जपपक्झपपक्ञपपक्टपपक्ठपपक्डपपक्ढपपक्णाप
 पक्तापपक्थपपक्दपपक्धपपक्नपपक्मपपक्फपपक्बप
 पक्भपपक्मपप पक्यपपक्लपपक्ळपपक्मपवप
 पक्शपप पक्षपपक्सपपक्हपप

पपक्कपपक्खपपक्कापपक्घपपक्ङपपक्चप
 पक्छपपक्जपपक्झपपक्झपपक्ञपपक्टपपक्ठप
 पक्डपपक्ढपपक्णापपक्तापपक्थपपक्दपपक्धप
 पक्नपपक्मपपक्फपपक्बपपक्भपपक्मपप
 पक्प्रपपक्प्रलपपक्प्रळपपक्प्रमपवपपक्प्रशपप
 पक्प्रषपपक्प्रसपपक्प्रहपप

पपक्कपपक्खपपक्कापपक्घपपक्ङपपक्चपपक्छप
 पक्जपपक्झपपक्ञपपक्टपपक्ठपपक्डपपक्ढप
 पक्णापपक्तापपक्थपपक्दपपक्धपपक्नपपक्मपपक्फप
 पक्बपपक्भपपक्मप पक्यपपक्लपपक्ळपपक्मपव
 पक्शपप पक्षपपक्सपपक्हपप